आर्थिक स्थिति बढ़ाना है तो ?

तटवर्ती वीर राघवराव

आर्थिक स्थिति बढ़ाना है तो ?

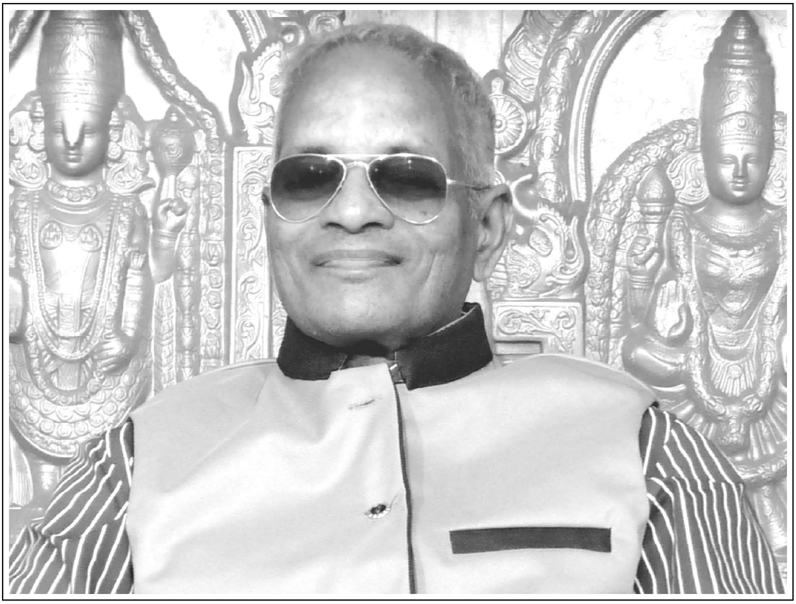

लेखक : श्री तटवर्ती वीर राघवराव

हिन्दी अनुवादः श्री नागेश्वर राव

For Books Please Contact :
TATAVARTHY VEERA RAGHAVARAO
Tatavarivary Street, BHIMAVARAM-534201.
W.G.Dist., A.P. Ph: 94403 09812

Rs.60/-

सूची

आर्थिक स्थिति बढ़ाना है तो ?......3

1. आर्थिक समस्याओं का कारण ?......4

- आर्थिक रूप से नष्ट होना......6
- आर्थिक स्थिति नहीं बढ़ना......8

2. आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होना।......10

- अर्हत नहीं होना......10
- अर्हत ना होने के कारण......10
- अर्हत नहीं होना......10
- अर्हत कैसे आएगा ?......12
- गरीब का जीवन का अनुभव करने को ऐसे जन्म लेते हैं......13
- अपनी आध्यात्मिकता को बढ़ाने के लिए पैसे की जरूरत नहीं है।.16

3. अगर आर्थिक स्थिति को बढ़ाना है तो ?......19

4. अगर इसी जन्म में आर्थिक स्थिति को बढ़ाना है तो ?......28

- करना होगा......28
- आपका भविष्य को गिरवी रखना चाहिए......32
- कोई दूसरा का सहाय करना है......32

5. अगर अत्यंत धनवान बनना है तो ?......38

आर्थिक स्थिति बढ़ाना है तो ?

आजकल दुनिया में अपनी आर्थिक स्थिति से बहुत लोग नाखुश हैं। सब लोग अपनी आर्थिक स्थिति को बढ़ाने के लिए बहुत प्रयत्न कर रहे हैं, गलतियां कर रहे हैं, पाप कर रहे हैं, अधर्म व्यवहार कर रहे हैं । इसी धन बढ़ाने के चक्कर में बहुत लोग ने लाखों या करोड़ों रुपया खो भी दिए हैं । हमारी सोसाइटी में भी बिटकॉइन में पैसे रखकर लाखों रुपए लाखों लोग खो चुके हैं ।

और हमारे दुनिया में धन की कमी से बाधित लोग हैं, धन कमाने के प्रयत्न करने वाले हैं, कुछ लोग दुखी हैं क्योंकि नहीं कमा पा रहे हैं, धनी लोगों को देखकर जलन होने वाले लोग हैं, ऐसे कई प्रकार के लोग हैं। कुछ लोग निराश लोग हैं जो भगवान को निंदा करते रहते हैं ।

इसलिए आर्थिक विषयों पर अवगाहन पा लेते हैं।

1. आर्थिक समस्याओं का कारण;
2. आर्थिक स्थिति खराब होने का कारण;
3. अगर आर्थिक स्थिति को बढ़ाना है, क्या करना है ?
4. अगर इसी जन्म में आर्थिक स्थिति बढ़ाना है, क्या करना है ?

इन सारे विषयों के बारे में जानेंगे ।

आर्थिक समस्याओं का कारण ?

मानव को जितना भी है उससे संतुष्ट नहीं है, जो नहीं मांगना है उसे मांगना, वह ही नहीं,और अधिक चाहत का आशा रखना, इस आशा रखने वाले मनस को संतुष्ट करना, इसके साथ-साथ मनस की चाहत को पूरी करने के लिए, पैसे की आवश्यकता है। इसलिए उस पैसे कमाने के लिए हर एक व्यक्ति गलत काम कर रहे हैं, धोखा देते हैं, झूठ बोलते हैं, अधर्म मार्ग में चले जाते हैं, अन्याय और अक्रम मार्ग में चल रहे हैं और इस संसार में सृष्टि के विरुद्ध व्यवहार कर रहे हैं। इसी का परिणामों से वह लोग आर्थिक समस्याओं में फंस जाते हैं,और रोते हैं कि मैं आर्थिक समस्याओं से दिक्कत में हूं।

इसके साथ लोग पूछते हैं कि आजकल कौन न्याय मार्ग में पैसे कमा रहे हैं ? ऐसे कह कर अपनी गलतियों को ढक लेते हैं। कुछ लोग पूछते हैं कि आजकल धर्म मार्ग में रहकर कैसे जी पाएंगे? इसके अलावा सोच नहीं पा रहे हैं लोग।

जानिए कि, आज आपका का आर्थिक स्थिति भूतकाल में किए हुए कर्मों के आधार पर ही हैं।

इसलिए आपका अपना आर्थिक स्थिति से संतुष्टि होकर, अपने जरूरतो तक सीमित रहकर, अनावश्यक चाहतों में ना फंसकर , सृष्टि के और सृष्टि धर्म के अनुसार कमाएंगे, तब कोई समस्या नहीं आएगा। आपका आर्थिक स्थिति के मुश्किलें से दुखी नहीं रहेगा। इसलिए जानिए , कोई भी अत्याशा से, और अधिक कर कर, गलत रास्ते द्वारा कमाने का प्रयत्नों ही, आपका आर्थिक अनर्थों की वजह है। जानिए कि, आर्थिक समस्याओं का कारण , इच्छाएं और अत्याशा, यह मन संबंधित विषय है। इसलिए अगर मन को सीमित रखेंगे, तब इच्छाएं भी सीमित रहेंगे। जब मन का शुद्धिकरण हो

जाएगा, अत्याशा भी चले जाएगा । अगर यह दोनों को हासिल करना है, तो हमें ध्यान करना चाहिए। जब ध्यान करेंगे, धीरे-धीरे से जो काम हमें नहीं करना है वह छोड़ देते हैं, धर्म और सृष्टि के विरुद्ध व्यवहार नहीं करेंगे, तब आपको आर्थिक समस्या नहीं होंगे।

जानिए कि, इस सृष्टि में अपने अपने अर्हत के हिसाब से आर्थिक स्थिति दिया जाता है। इसलिए कोई पैदाइश से ही करोड़पति होता है, कोई लखपति होता है, और कोई भिखारी होता है । कारण यही है कि, वह अपने पिछले जन्मों में कमाया हुआ अरहत से हुआ है । इसलिए अपने अरहत से ज्यादा आशा करके, सृष्टि के विरुद्ध प्रयत्न करेंगे, तब अनर्थ और आर्थिक समस्याओं होते हैं । इसलिए कमाने के लिए ज्यादा कष्ट करने की कोई जरूरत नहीं है। अगर आप ज्यादा भी कष्ट करेंगे या मामूली से करेंगे, तब भी आपको जो आना है आएगा, जो होना है होगा और जो जाना है जाएगा भी।

इसलिए अगर आप चाहते हैं कि कोई भी आर्थिक समस्या न हो, तब आपको धर्म बध्द होकर कमाना चाहिए । इसी तरह अगर आपका आर्थिक स्थिति बढ़ाना है, तब आपको अभी से ही अर्हत बढ़ाने का प्रयत्न करना चाहिए। अरहत बढ़ेगा जब हम देते रहेंगे । इस सृष्टि में जो देते हैं वही पाएगा, जो देते हो वही पाएगा और जितना देगा उतना मिलेगा।

आपको धन की बढ़ोत्तरी करना है तब आपको पैसे देना होगा, लोक कल्याण कर्मों के लिए आपका पैसा खर्च करना चाहिए। अगर उस स्थिति तक पहुंचना है तो, आपको ध्यान करना चाहिए। ध्यान करने से वह सात्विक गुण में आते हैं और तब बिना किसी को बताने से, वह देता रहेगा। ऑटोमेटिक ही वह भविष्य में धनवान बन जाएगा। साथ-साथ अधर्म कर्मों न करने पर, उनका आर्थिक समस्याओं भी नहीं होगा।

यह आर्थिक समस्या दो प्रकार के होते हैं।

1. आर्थिक रूप से नष्ट होना ।
2. आर्थिक स्थिति नहीं बढ़ना।

1. आर्थिक रूप से नष्ट होना :-

कुछ लोग कुछ सालों के लिए आर्थिक स्थिति अच्छी रहती हैं, बाद में पता नहीं आर्थिक स्थिति खराब होने से, सब चीज बेचकर, और उधार में आ जाते हैं।

उदाहरण के लिए रिलायंस का मुकेश अंबानी का भाई, अनिल अंबानी, को देखेंगे, हमें समझ में आता है । अनिल अंबानी उधार में आ गया है। एक समय उनका स्थिति बढ़िया था और अब बेकार स्थिति में है । संसार में ऐसे लोग बहुत हैं। यह सब पिछले जन्मों का किया हुआ कर्म ही समझो।

इसलिए अगर आर्थिक स्थिति खराब हो गया मतलब जरूर पिछले जन्मों में या पहले बहुत धोखा किए हैं, अधर्म से कमाया, दूसरों का धन को अपहरण किया, लूट या गुंडागर्दी से छीन लिया । उन्हीं का परिणाम आज भुगत रहे हो।

यह विषय अभी उनको समझ नहीं आ रहा होगा । लेकिन कोई भी हो, आपका जो भी पहले किया है, उसी को जरूर चुकाना है। इस विषय को न जानने से ही बहुत लोग अधर्म मार्ग में कमाते हैं, और सृष्टि के विरुद्ध व्यवहार कर कर धनी बनना चाहते हैं । लेकिन सृष्टि का नियम और धर्म नहीं पालन कर रहा है। इसलिए जो सृष्टि विरुद्ध व्यवहार करते हैं उनका परिणाम चुकाना पड़ता है और चुका भी रहे हैं।

देखिए, हमारी सोसाइटी में कुछ लोग क्या कहते हैं , मनी मेडिटेशन करने से पैसे मिलेगा। सोचिए , कर्मो करने वालों को मनी मेडिटेशन से पैसे आएगा है क्या ? कैसे आएगी ? इसी प्रकार कुछ लोग कर्म- विपाक ध्यान करवाते हैं। क्या अगर हम आंख बंद कर कर, कर्म चले जाएंगे, कर्म चले जाएंगे, कहने से, क्या कर्म चले जाएंगे क्या ? कैसे जाएगा ? श्री कृष्ण भगवान ने कहा है

श्लोक: यथैधांसि समिद्धोऽग्निर्भस्मसात्कुरुतेऽर्जुन ।
ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुते तथा ।। (भ.गी.4-37)

तात्पर्य : हे अर्जुन जिस प्रकार एक अग्नि पूरी तरह जलने पर लकड़ी

को राक कर देता है, उसी प्रकार, ज्ञान अग्नि आपका समस्त कर्मो को भस्म करता है।

यहां श्री कृष्ण भगवान ने स्पष्ट से कहा है कि, सिर्फ ज्ञान अग्नि में ही आपका कर्मो नाश होगा। इसीलिए सोचिए, अगर बैठकर कहेंगे कि, मेरे कर्म निकल गया, निकल गया, वह निकलेंगे क्या ? सिर्फ आपको आकर्षित करने के लिए वह ऐसे कहते हैं। वास्तव में ऐसे ध्यान से कोई भी फायदा नहीं है । अगर आपको सच में कर्मो से विमुक्त होना है तो, आपको ज्ञान प्राप्ति करना है। और ज्ञान कैसे प्राप्त करना है , हमारे पत्री जी, ने बता दिया। मैं और मेरी मैडम भी कर रहे हैं । इसलिए वह काम कीजिए।

अगर ज्ञान नहीं प्राप्त करेंगे तब आपको कर्मो को अनुभव करना ही पड़ेगा। इसलिए जानिए कि, ऐसे ध्यान से कोई फायदा नहीं है। तब ऐसे आर्थिक समस्याओं में रहने वालों को क्या करना है ? वह सृष्टि के नियम के अनुसार जीना है । तब आपका भविष्य बदलेगा । अभी खराब हो सकता है, लेकिन भविष्य तो ठीक होगा।

इसलिए किसी को भी अपने पहले किए हुए कर्मो के आधार पर आपको जो मिलना मिलेगा और जो जाना है जाएगा । इसलिए बैठकर रोने से कुछ फायदा नहीं है । कम से कम अभी से सृष्टि के नियम अनुसार व्यवहार कर कर अपना भविष्य को बदलिए।

देखिए कुछ लोग अपने रिश्तेदारों से ही पैसे को वापस नहीं करते हैं, कहते हैं कि हमें धोखा दिया है। इसका कारण यही है कि, पिछले जन्मो में किसी को धोखा दिया है। इसका परिणाम अभी भुगत रहे हो बस।

कुछ लोग कहते हैं कि, चिट फंड कंपनियां वाले धोखा दिया है। कुछ लोग कहते हैं कि फाइनेंस कंपनियों ने धोखा किया । लेकिन अपने-अपने पिछले जन्म में किसी न किसी को धोखा दिया है और इसलिए अभी किसी न किसी ने उसको धोखा दिया। इसलिए जानिए कि, परमात्मा का नियम से कोई बच नहीं सकता । धोखा देना आसान है, लेकिन जब आपको धोखा होता है तब भोज उठाना मुश्किल है।

2. आर्थिक स्थिति नहीं बढ़ना :-

बहुत लोग आर्थिक स्थिति खराब होने पर, उसे अच्छा करने की कोशिश करते हैं । दिन-रात ओवर टाइम कर कर मेहनत करते हैं। लेकिन जितना भी मेहनत करते हैं उसकी स्थिति में बदलाव नहीं आता है। लेकिन कुछ लोग बिना मेहनत कर कर ही अच्छा स्थिति पहुंचते हैं। इसलिए पहले उनके कारण समझते हैं, और उनका परिष्कार भी जानेंगे ।

पहले हमें एक विषय जानना चाहिए। हम सब इस संसार में सृष्टि करता से पैदाइश हुए हैं। यहां हम मतलब सिर्फ मानव ही नहीं, 84 लाख प्रकार का जीव भी सृष्टि किया है । यह सारे जीवन उस सृष्टि करता, या परम ब्रम्ह, का दिया हुआ नियमों और सिद्धांतों के अनुसार ही जीना चाहिए। अगर उनके विरूद्ध जाएंगे, तब हमें शिक्षा मिलेगा । मतलब कुछ कष्ठों , नष्ट और समस्याओं के रूप में मिलेगा।

इनमें एक मुख्य सिद्धांत है, 'कर्म सिद्धांत', मतलब जो भी पिछले समय में किया है उसका परिणाम अभी मिलेगा । और जो भी अभी करेगा उसका परिणाम भविष्य में मिलेगा । इस विषय को याद रखना चाहिए, कभी भूलना नहीं है।

और आपको याद रखना है कि अभी का आर्थिक स्थिति पिछले समय में किया हुआ कर्मो के आधारित है। इसी प्रकार आपका भविष्य स्थिति अभी करने वाला कर्मो आधारित होगा । इसी प्रकार आर्थिक स्थिति खराब होने का और नहीं बदलने का भी कर्म सिद्धांत के अनुसार ही है।

मतलब भूतकाल में किया हुआ कर्मो पर ही आर्थिक स्थिति होगा। आपने भूतकाल में पुण्य किया है, मतलब दान, सेवा आदि और बाद में धोखा दिया है, किसी को पैसे वापस नहीं किया है। तब क्या होगा? प्रारंभ में आपका पुण्य कर्मो से अच्छा स्थिति होगा, बाद में आपका पाप कर्मो से खराब स्थिति हो जाता है। तब अपने आप से पूछते हो यह क्या हो गया? भगवान मुझे अन्याय किया है करके, आप दुखी रहते हो। उससे कुछ फायदा नहीं है क्योंकि सब आपका किया हुआ कर्मो का फल ही है।

क्यों की? हमारी सोसाइटी में मनी मेडिटेशन के पीछे भाग रहे हैं बहुत लोग । इनके आर्थिक समस्याओं के कारण से और खराब होने से भी। यह सब लोग आगे पीछे नहीं सोचते हैं। ऐसे लोगों का फायदा उठा रहे हैं कुछ लोग।

और बहुत कुछ लोग अपने आर्थिक स्थिति को बढ़ाने के लिए मन्नत रखते हैं, गुरुओं को आश्रय करते हैं, प्रार्थना समूहों में जाते हैं। कुछ लोग धनलक्ष्मी यंत्र और कुबेर यंत्र भी पहनते हैं। और कुछ लोग घर का वास्तु भी ठीक करवाते हैं और अपनी कुंडलिनी देखकर भविष्यवाणी को भी करवाते हैं। ऐसे बहुत प्रकार अपने धन को बढ़ाने को कोशिश करते हैं। लेकिन जो भी अपना आर्थिक स्थिति को बढ़ाना चाहते हैं पहले इन विषयों पर समझ होना चाहिए :

1. मैं इस सृष्टि में हूं।

2. इस सृष्टि का सृष्टि करता है।

3. इस सृष्टि करता का दिया हुआ नियमों, मतलब धर्म और सिद्धांतों भी है।

यह विषयों को भूलना नहीं चाहिए।

मुख्य स्तर पर, इस सृष्टि में मैं हूं, और, सृष्टि का नियमों, मतलब धर्म का विषय भूलना नहीं चाहिए ।

क्योंकि जो भी प्राप्त करना है या कमाना चाहते हैं , इस सृष्टि के नियमों के अनुसार ही प्रयत्न करना चाहिए । इसके अलावा, अपनी इच्छा के अनुसार प्रयत्न करने से या कष्ट करने से, कोई फायदा नहीं होगा । कोई भी गुरु या पीठधीश के पांव पकड़ने से भी कुछ नहीं कर सकते हैं।

गुरुओं को हम आश्रय करते हैं और सेवा करते हैं, सिर्फ उनसे सही रास्ते जानने के लिए। कोई आपको धन नहीं दे सकता या हमें धनवान नहीं बना सकता है।

2.आर्थिक स्थिति ठीक नही होना।

इसका तीन मुख्य कारण है।

1. अर्हत नहीं होना ।

2. एक गरीब का जीवन अनुभव लेने केलिए।

3. आध्यात्मिकता में बढ़ने के लिए पैसे की जरूरत नहीं है। यह समझकर, एक योगी का परिवार में जन्म लेते हैं। वह धन को नहीं चुनते हैं।

1. अर्हत नहीं होना :-

'अर्हता नहीं होना' - मतलब भूमि पर आ गए हैं, लेकिन बिना अर्हत प्राप्त कर कर आ गए हैं । कौन सा अर्हता? मतलब आर्थिक स्थिति का अरहत। इसलिए जानिए कि, किसी के पास धन है मतलब उसका अर्हता है, और जिसके पास नहीं है उसका अर्हत नहीं है।

इसलिए बिना अर्हत, आप जो कुछ करो, जितना भी कष्ट करो, ओवरटाइम कर लो , धन बढ़ेगा नहीं । बेट्टिंग करो, बिटकॉइन में रखो, कुछ नहीं होने वाला है । धोखा देने से या किसी से लूठी भी करो आपका धन नहीं बढ़ेगा। इसलिए आपका बुध्दि , अर्हत प्राप्त करने में इस्तेमाल करो।

मगर अर्हत ना होने का कारण जानते हैं और अर्हत कैसे मिलेगा वह जानते हैं ।

अर्हता ना होने के कारण :-

1. पिछ्ले जन्मों में किया हुआ धोखेबाज कर्मो, अधर्म संपादन, मतलब किसी दूसरों का धन छीनना और मासूम लोगों पर अपना अधिकार और बल प्रयोग कर कर छीनना ।

2. भूतकाल में जितना भी पैसा हो वह किसी दूसरों को नहीं बांटना।

3. भूतकाल में किसी को भी कुछ नहीं देना ।

4. भूतकाल में धन-दान नहीं करना ।

यह सब कारण है, आपको अर्हत नहीं होने का। ऐसे काम कर कर अब रोने से धन कैसे प्राप्त होगा । जाने या अनजाने आप पिछ्ले जन्मों में

ऐसे जिए थे। अब ऐसे लोगों को क्या करना है ? कम से कम अभी से किसी को धोखा नहीं देना, अन्याय नहीं करना और अधर्म तरीके से कमाना नहीं चाहिए ।

20 साल पहले, मतलब मेरे पत्री जी से परिचय होने से पहले, यह विषय मुझे मालूम नहीं था । तब जितना धन हो उतना महान समझते थे, उतना गौरवशाली समझते थे । इसलिए दिन-रात कष्ट कर कर कमाता था। हर समय मैं यही देखा था कि कितना कमाना है, कितना कमाया, लेकिन कैसे कमा रहा हूं, मैंने देखा नहीं । मेरा राइस मिल व्यापार है, बड़े व्यापारियों में, मैं भी एक हूं ।

पत्री जी से परिचय होने के बाद, मैं सोचने लगा, असली में मैं धन कमा रहा हूं या पाप कमा रहा हूं ? मुझे समझ आया है कि मैं पाप ही कमा रहा हूं, धन नहीं । इसलिए मैं अपना व्यापार बंद कर कर, ज्ञान मार्ग में आ गया हूं।

अगर आपके पास तीसरी आंख है और उससे देख सकते हो, यहां अभी जो भीख मांग रहे हैं, या गरीब लोग, यह सब लोग पिछले जन्मों में बहुत धनवान लोग ही हैं। उन हालातो का कारण यही है कि, जब धन था वह सही तरीके से खर्च नहीं किया, दान नहीं किया, और ज्यादा पैसे होने से, अपने भोग विलासों में, दिखावटी में खर्च कर दिया। जो दिया हुआ पैसा पूरी तरह से व्यर्थ ही नहीं करना, इसका दुरुपयोग भी किए हैं। इसका परिणाम ही अभी वह, गरीबी का अनुभव कर रहे हैं ।

इसलिए कम से कम अभी से धर्म का कमाई करो, छांच और चावल खाकर जीयो। अधर्म मार्ग में नहीं कमाना चाहिए। जितना है, उतना से जियो और संतुष्ट रहो। दूसरों से तुलना मत करो। जानिए आपका इस स्थिति सिर्फ इस जन्म तक है। अगर सही तरीका से जीयेंगे अगला भविष्य भी बदलेगा। इसलिए दूसरों का मत चाहो, जो है वह छुपाना नहीं, और दूसरों का धन अपहरण मत करना।

अर्हत कैसे आएगा ? :-

अर्हत आएगा जब देंगे। जो देंगे वह आएगा, जितना देगा उतना आएगा। इसलिए जिसको धन चाहिए धन देना होगा।

इसलिए पत्री जी कहते हैं कि, 'बांटने से बढ़ेगा और छुपाने से छीना जाएगा ' ।

इसलिए अगर आपको धन बढ़ाना है धन को बांटना ही है। अगर छुपाएंगे तो कभी ना कभी प्रकृति आपसे छीन ही लेगा । यह प्रकृति का नियम है । इसलिए पत्री जी लोक कल्याण काम ही करवाते हैं । आत्मा सेवा में धन को खर्च करने को कहते हैं ।

श्री विद्या प्रकाशानंद जी कहते हैं कि। 'जो छुपाया है, वह निकल जाएगा', जो दूसरों को बांटते हो, वही आपके साथ, आपके खाते में जमा होता है।' और यह भी कहा है कि, आप जो खाते हो वह मिट्टी में मिल जाएगा, लेकिन दूसरों को दिया हुआ है,वह आपका 'दूध' है। इसलिए शास्त्रों में कहा गया है कि 'जितना किया है, उतना ही, महादेवा' ।

इसलिए जानिए कि, जो भी देते हो वही मिलेगा । धन-दान करेंगे तब धन मिलेगा । अगर आप नहीं देते हो, कहां से मिलेगा ? नहीं ना ? सहज में, बहुत लोग पैसे नहीं दे सकते हैं। लेकिन सृष्टि में देने वाला ही महान है, क्योंकि देना कष्ट है लेना आसान है। लेकिन जितना भी कष्ट है, देने से ही मिलेगा। जितना है उसी में से थोड़ा देना । आपको करोडों देने की जरूरत नहीं है ।

इसलिए अगर 100 रूपये है, 1 रूपये दे दो। इस सृष्टि में करोड़ देना मुख्य नहीं, जितना परसेंटेज देते हो वही मुख्य है। एक आदमी करोड़ रूपए वाला है, उनमें से एक लाख दिया, मतलब एक परसेंट दिया है। और दूसरा आदमी हजार रूपए में से 100 रूपये दिया, मतलब 10% दिया है ।

इसलिए सृष्टि के हिसाब में या भगवान के हिसाब में 100 रूपये देने वाला ही महान है। लेकिन सामान्य लोग समझते हैं कि लाख देने वाला महान है।

लेकिन भविष्य में 100 रूपये देने वाला करोड़पति बनेगा, लाख देने वाला सामान्य होगा। इसलिए सारे पैसे देने की जरूरत नहीं है। जितना है, उसी में से जो दे सकते हो उतना देना है। धन प्राप्ति करने का अरहत कमाओ ।

2. गरीब का जीवन का अनुभव करने को ऐसे जन्म लेते हैं :-

आर्थिक स्थिति नहीं होने वाले कुछ लोग, ऐसे ही जन्म चुनकर आते हैं।

सहज में धनवान लोगों में गर्व, अहंकार ज्यादा होता है। देखिए जमींदारों, राजवंशी, धनवान लोगों में, अपनी धन पर बहुत गर्व होता है। इस धन का गर्व से, धन के मद में, गरीब लोगों को नीचा दिखाते हैं, अपमान करते हैं, और बेकार लोगों की तरह देखते हैं ।

लेकिन जानना है कि, सब एक है और सब आत्मा ही है। अगर सब आत्मा ही है सब एक ही है ना ? और सब समान है ना ?

इसलिए श्री अन्नामाचार्य जी का गाना है, कि, ब्रह्मम एक है, और परब्र्म्मं भी एक ही है। गाते गाते हैं और कहते हैं की कि, 'हीन-अधिक कोई नहीं है', क्योंकि हर एक के लिए श्री हरि अंतरात्मा है ।

इसका तात्पर्य यही है कि इस दुनिया में कोई कम या अधिक नहीं है, क्योंकि सब के लिए श्री हरि ही अंतरात्मा है । इसलिए सब समान ही है। सब एक ही है, श्री अन्नामाचार्य जी कहते हैं ।

यही विषय श्री भागवत गीता में भी कहा गया है

श्लोक : **विद्याविनयसम्पन्ने ब्रह्मणे गवि हस्तिनि ।**

शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः (भ.गी.5-18)

तात्पर्य : विद्या और विनय होने वाला ब्रह्मण, गाय, हाथी, कुत्ता , मांस खाने वाला चांडाल, इन सब पर समदृष्टि रखने वाला ही पंडित है। मतलब बहुत ज्ञानी है ।

लेकिन इस ज्ञान न होने के कारण, एक धनवान खुद को कारण जन्मी बताकर , महान समझता है। गरीब लोगों को नीचा दिखाता है। कोई मदद मांगने आया तो डांटता है, कुछ काम करने को कहकर भागता है। उसका कष्ट को वह समझ नहीं पाता है। पैसे होने पर भी उसको मदद नहीं करता है ।

अंत में वह मर जाता है और मरने के बाद ऊपर लोकों में भुवर्लोक को जाता है वहां पर उन्हें समझाते हैं, कौन्सिलिंग होता है ।

वहां पर उनको डांट पड़ता है कि, उतना धन रख कर भी आपने क्यों मदद नहीं किया ? क्यों जी ? आप धनवान का जन्म लेकर गरीब को अपमान किया है। मतलब आपको उसका तकलीफ नहीं समझते हैं। इसलिए जब आप गरीब का जन्म लेगा तब आपको अनुभव होगा, तब ऐसे व्यवहार नहीं करेगा। तब उसको गरीब का जन्म देकर और उसी प्रकार का कर्मो को चुनने को कहते हैं, नहीं तो ऊपर लोक पहुंच नहीं पाएगा, उसे कहते हैं। उसको यह बात समझकर गरीब का जन्म चुनता है क्योंकि उसको गरीबी का अनुभव करना है।

इस प्रकार गरीब के परिवार में जन्म लेता है। इस प्रकार के माता-पिता को चुनता है और जन्म से ही गरीब होता है। बाद में वह पूछता है कि मैं इतना गरीब क्यों हूं ?

इसे समझ सकते हैं कि आर्थिक स्थिति नहीं होने के कारण, गरीबी का अनुभव लेने के लिए ही है ऐसे जन्म लिया है। सच देखेंगे तो वह पहले करोड़पति ही था । लेकिन अभी गरीब है। इसलिए कहते हैं, 'बैलगाड़ी जहाज बन जाते हैं और जहाज बैलगाड़ी बन जाते हैं'। इसलिए धन होने से कभी गर्व नहीं होना चाहिए। कारण, धन शाश्वत नहीं है । इसलिए धन होने पर, उसे धन को अपनी जरूरतों को उपयोग कर कर, बाद में दूसरों को, और लोक कल्याण के लिए उपयोग करना चाहिए ।

यही विषय श्री शिर्डी बाबा ने ईशावास्य उपनिषद में कहा है :

श्लोक **ईशावास्य मिदं सत्यं यत्किंच जगत्यां जगत ।**

तेन त्थक्तेन भुंजिथा माग्रुधः कस्य सिद्दनम । (81-97)

तात्पर्य : अखिल ब्र्स्मांड में जड़ और चैतन्य स्वरूप के सारे ही ईश्वर से ही व्याप्त करते हैं। इसका मतलब दुनिया में जो भी हिल रहा है या नहीं हिलता है, सारे रूपों इसी परब्र्स्म से ही व्यापित है, बाबा कहते हैं उसका अर्थ। उसने और भी कहा है कि जिसके पास जो भी है ,वह परब्रह्म का ही है। वह जो भी मिला है, वह ईश्वर का ही है क्योंकि इसी ईश्वर से ही हमें मिला है। इसलिए

ईश्वर से जो प्राप्त किया है वह त्याग पूर्वक भावना से ही अनुभव करना चाहिए और बांटना भी चाहिए। किसी प्रकार का लोभ या मोह नहीं होना चाहिए। और किसी और का आशा नहीं रखना चाहिए, और अपहरण नहीं करना चाहिए - बाबा ने विवरण दिया है ।

त्यागपूर्वक मतलब ? जो भी हमारे पास है उसको अनुभव करना हैं और जितना है उसी में थोड़ा बहुत दूसरों को सहाय करना चाहिए ।

बहुत लोगों को इस ज्ञान न होने से लाखों लाखों पैसे अपने दिखावटों के लिए और अय्याशी के लिए खर्च कर देते हैं। लोक कल्याण के लिए कुछ भी खर्च नहीं करते हैं । अगर देते भी हैं तो बहुत ही कम उपयोग करते हैं। उनको मालूम नहीं है कि अगर सबके लिए खर्च करेंगे तब उसका फायदा कितना होगा।

जानिए कि सब लोग दैव स्वरूप ही है। सब लोगों को किया हुआ सेवा, देवताओं का सेवा ही हो जाता है। अगर लोगों को अच्छा ही करेंगे तब देवताओं को करना समान है। अगर उसको समझ सकते हैं और इस ज्ञान होता, तब कोई भी बिना देकर रह नहीं सकता है। अगर इसका ज्ञान नहीं है तब जितना भी है, थोड़ा सा भी नहीं दे पाएगा ।

अगर हमारा जीवन सफल होना है तो ? अगर हमारा भविष्य अच्छा रहना है तो ? जितना है उसी में से देना सीखना चाहिए। तभी सब लोग भीमावरम् क्लास में आ रहे हैं । सीखने के लिए। मतलब जीवन के सूक्ष्म जानने के लिए और मर्मों को जानने के लिए ।

धन न होने पर बहुत लोग पूछते हैं, क्या यही मेरा जीवन है ? उसका परिष्कार नहीं है क्या ? मुझे ऐसे ही दुखी रहना है क्या ?

इसलिए इन विषयों का परिष्कार है या नहीं, अभी जानते हैं ।

इसी प्रकार आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होने का एक और कारण ।

३. अपनी आध्यात्मिकता को बढ़ाने के लिए पैसे की जरूरत नहीं है। इसके अलावा, धन एक रुकावट समझते हैं। इसलिए कुछ लोग अवसर मिलने पर

भी सामान्य जीवन को ही चुनते हैं ।

बहुत लोग कई जन्म ले चुके हैं , मतलब 300 - 350 जन्म तक ले चुके हैं। उनको यह विषय यहां भूमि पर नहीं जानते होंगे, लेकिन ऊपर लोकों में कितना जन्म लिए हैं, क्या-क्या जन्म लिया है, यह सब जानते हैं । इस प्रकार कई तरह के जन्मों लेते हैं और इसके बाद उनको आध्यात्मिकता में बढ़ावा चाहते हैं। मतलब आत्मा का बढ़ावा चाहते हैं। ऊपर लोकों में रहते वक्त उनको ऐसा आध्यात्मिकता बढ़ाने का भावना होता है ।

कारण यही है की आध्यात्मिकता में बढ़ने से और ऊपर लोक पहुंच सकते हैं। क्योंकि अब तक जना लोक के नीचे ही लोक में हैं। उससे ऊपर नहीं गए हैं । 300 -350 जन्म लेने के बाद भी जना लोक के नीचे ही लोक में है। लेकिन जनालोक को पार कर कर ऊपर महान लोकों में नहीं गए हैं। वहां के लोग इनको डांटते हैं कि, कितने जन्म लेंगे ? जनालोक के ऊपर लोक में नहीं जाना है क्या ? उस लोकों बहुत ही महान है। इसलिए उसका प्रयत्न करना चाहिए। तब यह लोग कहते हैं कि मैं तैयार हूं, और पूछते हैं कि उसके लिए क्या करना है ?

तब उनको समझाते हैं कि अगर आध्यात्मिक बढ़ावा चाहते हैं आपको आत्मा का बढ़ावा चाहिए। उस के लिए ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। तभी उन महान लोकों को पहुंच पाते हैं। उसके लिए प्रयत्न करना है।

उसके लिए क्या करना है ? यह लोग पूछते हैं। समाधान में वह लोग कहते हैं कि अभी तक पैसे के पीछे भागा, जितना भी जन्म लिए हो भूमि पर। इसका फायदा मिला तुम्हें ? ऊपर लोकों को नहीं पहुंच पाया है ना ? अगर धन ज्यादा होगा गर्व बढ़ जाता है और आध्यात्मिकता को नहीं बढ़ा सकते हो। इसलिए सामान्य का जीवन या अति सामान्य का जीवन वर्ग में परिवार को चुनना चाहिए। तब आपका दृष्टि पैसे पर नहीं, बल्कि आध्यात्मिकता के ऊपर रहेगा - ऊपर लोक वासी उन्हें कहते हैं ।

तब उन्हें समझ आता है कि आध्यात्मिक प्रगति के लिए पैसे की जरूरत

नहीं है । इसलिए वह सामान्य परिवार को चुनता है । जानबूझकर ही धन को नहीं चुनता है, चाहे तो वह चुन सकते हैं। लेकिन कितने जन्मों तक धन का अनुभव लेता रहेगा ? इसलिए वह आर्थिक स्थिति को चुनता नहीं है ।

जीसस ने कहा है कि, एक ऊंट को सूई की रंद्र में भेज सकते हो, लेकिन एक धनवान को कभी मोक्ष नहीं पाएगा।

इसलिए , देखिए संसार में बहुत धनवान लोग हैं। जब उनसे ध्यान करने को कहते हैं वह बोलते हैं कि उनके पास समय नहीं है। हमें बहुत काम है। अगर ध्यान नहीं करेंगे तो ज्ञान कैसे मिलेगा? अगर ज्ञान नहीं होगा तब मोक्ष कैसे प्राप्त होगा? कितना भी जन्म ले लो, कभी मोक्ष नहीं पाएगा। इसलिए आध्यात्मिक प्रगति के लिए, बहुत लोग सामान्य परिवार को ही चुनकर आते हैं।

हमारी ही सोसाइटी में जब देखेंगे , इस आध्यात्मिक मार्ग में आने वाले बहुत लोग सामान्य या अति सामान्य परिवारों से ही ज्यादा है । मतलब मध्यम वर्ग या नीचे मध्यम वर्ग के होते हैं। करोड़पति लोग बहुत ही कम है।

आप मुझे पूछ सकते हो, आपके पास बहुत धन है ना ? उसका पीछे भी एक कारण है । कुछ लोग मतलब बहुत बड़े हुए आत्मा, अपना धन सिर्फ लोक कल्याण को ही खर्च करता है। कारण यही है कि इस तरह का निर्णय लेकर आ चुके हैं, इसके अलावा कुछ नहीं है।

देखिए मैं जबकि एक धनी परिवार में पैदा हुआ हूं, पत्री जी के द्वारा मुझे ज्ञान मिलने के बाद, मैंने सारे व्यापार छोड़ दिया हूं । क्योंकि मेरा प्रणालीका धन कमाना नहीं बल्कि मैंने जो भी ज्ञान प्राप्त किया, उसको बहुत लोगों तक पहुंचाना है । इसलिए पत्री जी के परिचय होने से ही मैंने अपने सारे व्यापारों को छोड़ दिया हूं ।

यही नहीं मैंने ध्यान क्लास निर्वहन करने वाले ज्ञान मंदिर, कल्याण मंडप , सभी मैंने 1988 में ही निर्माण किया हूं। तब से 2002 तक पत्री जी के परिचय तक, वह खाली ही पड़ा था। मुझे समझ नहीं आया था यह सब मैं क्यों बनवाया था। लेकिन बनाया था । मुझे समझ आया जब पत्री जी के

परिचय के बाद , अपना प्रणाली के अनुसार ही मैंने पहले ही बनवाया था ।

बहुत लोग पत्री जी से पूछते हैं कि, हमारे पास पैसे नहीं है अगर होता तब हम बहुत सेवा कर चुके होते थे। उसका जवाब देते पत्री जी ने कहा आप सब लोग सेवा कर रहे हैं क्योंकि पैसे नहीं है, अगर होता तो आप नहीं कर रहे होंगे। इसलिए देखिए कि, अगर जिसके पास पैसे नहीं है और उसे पैसे मिल गया तब आंखें आसमान में रहेंगे। पैसे नहीं होने पर ही नीचे जमीन पर रहेगा। थोड़ा बहुत पैसे आने पर उसको पकड़ नहीं सकते हैं । इसलिए इस कारण से भी उसके आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होता है।

इसलिए अगर आप ध्यान में आए हैं इसका मतलब आप अपने पिछले जन्मों में धोखेबाजी कर कर, अधर्म मार्ग में कमा कर, बहुत पाप कर्मों कर कर नहीं आए हैं। आप सब आध्यात्मिक प्रगति के लिए आए हुए हैं। आपके पास पैसे हैं या नहीं, अपने लिमिट में आप सेवा करेंगे । अगर हम देखेंगे, पत्री जी के मार्ग में ऐसे ही लोग बहुत हैं।

याद रखिए कि आप सब आध्यात्मिक प्रगति के लिए आए हैं । आर्थिक स्थिति को बढ़ावा करने नहीं। इसलिए जिसके लिए आए हैं अगर वह काम नहीं करेंगे, और धन के पीछे भागेंगे, आपको बड़ी-बड़ी झटकारें लगेंगे ।

3.अगर आर्थिक स्थिति को बढ़ाना है तो ?

यह सब सुनकर बहुत लोग सोचते होंगे क्या मेरा जीवन यही है ? कोई रास्ता नहीं है क्या? ऐसे ही रह जाना है क्या? मुझे कमाने का अवसर नहीं है क्या? लेकिन अगर चाहते हो अभी भी आपका आर्थिक स्थिति बढ़ा सकते हैं। सृष्टि के नियमों के अनुसार ही प्रयत्न करना चाहिए।

बहुत लोग एक धनवान को देखकर कहते हैं कि वह बहुत खुशनसीब वाला है। जिसके पास नहीं है समझते हैं कि वह बदनसीब वाला है। साथ-साथ ऐसे भी सोचते हैं भगवान मुझे यह दिया है मैं खुशनसीब हूं और जिसको नहीं दिया वह सोचते हैं कि भगवान ने उसे बदनसीब बना दिया है।

लेकिन अगर सोचेंगे यह सब भगवान का किया हुआ नहीं है। खुद अपने आप किए हुए हैं। क्योंकि जिसे जितना मिला है, अरहत प्राप्त करने के आधार पर ही है। इसलिए कष्ट करना, कृषि करना, मुख्य नहीं है। अरहत को प्राप्त करना प्रधान है।

इसलिए देखिए, मुकेश अंबानी का पोता। वह पैदाइश से ही अपर करोड़पति बन जाता है। इसी तरह एक गरीब को या कूली को पुत्र जन्म होता है, वह पैदाइश से ही दरिद्र बन जाता है। सोचिए अंबानी का पोता अपर करोड़पति कैसे हो गया? यह क्या कष्ट किया है? क्या कृषि किया है? अभी तो पैदा हुआ है न? कुछ भी कष्ट नहीं किया है। बिना कृषि किया ही करोड़पति हो गया है न? और ज्यादा सोचेंगे तब भगवान सबके लिए समान है न? उसको राग और द्वेष नहीं होता है न?

तब क्यों कुछ लोगों को धनवान और कुछ लोगों को गरीब बनाता है? वह नहीं करता है न? तब ऐसे पैदा होने का क्या कारण है? मतलब अर्हत है। इसलिए जानिए कुछ लोग पिछले जन्मों में अरहत प्राप्त किया है। करोड़पति बन गए हैं । एक भिखारी का पुत्र अरहत प्राप्त नहीं किया, दरिद्र बना। इसलिए आर्थिक स्थिति अपने अरहत से प्राप्त होता है। दिन-रात कष्ट करने

से नहीं आता है ।

तब इस सृष्टि में अर्हत कैसे आयेगा? ऐसा संदेह बहुत लोगों को हो सकता है। लेकिन सृष्टि में अर्हत आएगा, जब देते हो तब मिलता है। वही नहीं, जब देते हो खुद ही आएगा। और जितना देते हो उतना ही मिलेगा। इसलिए इस सृष्टि में जो भी आर्थिक स्थिति को बढ़ाना चाहते हैं, उनको अर्हत कमाना है, मतलब देना ही चाहिए।

इसलिए अगर धन बढ़ाना चाहते है, धन देना है। देना ही पड़ेगा। ज्यादा धन मिलना है तो ज्यादा धन देना है।

यहां पर आपको संदेह हो सकता है, करोड़ों देकर करोड़ों प्राप्त क्यों करना? करोड़ खुद ही रख सकते हैं न? कुछ लोग सोचते हैं ऐसा कि अगर मुझे करोड़ देना है तो मेरे पास करोड़ होना चाहिए न? उतना पैसे नहीं है तब मैं कैसे दे सकता हूं करोडों? तब मुझे करोड़ों कमाने का अर्हत कहां से मिलेगा? उस अवसर सिर्फ करोडों होने वाले के पास ही है। मुझे कैसे हो सकता है? ऐसे भी सोचते हैं। कुछ लोग सोचते हैं हमारे पास पैसे नहीं है, सेवा करने के लिए, वह अवसर सिर्फ धनवान को ही होता है, मेरे जैसे लोगों को नहीं ।

और कुछ लोग भगवान को निंदा करके, कहते हैं कि मुझे गरीब बना दिया है। सेवा करने का भाग्य भी मुझे नहीं दिया। धनवान होने का अवसर भी हमें नहीं दिया, और दुखी होते हैं। और भी सोचते हैं कि इस सृष्टि में सिर्फ करोड़पति को ही करोड़पति बनने का अवसर है। लेकिन हमारा जैसे गरीबों को वह अवसर नहीं है ऐसे समझ कर दुखी होते हैं ।

लेकिन सृष्टि में भगवान ने धनवानो और गरीबों को करोड़ों कमाने का समान अवसर दिया है। कारण यही है कि उनके नजर में सब समान है। इसलिए वह कैसे, हम जानते हैं। यहां पर मानव का हिसाब और सृष्टि का हिसाब में बहुत फर्क है। मानव यहां कितना दिया है को देखते हैं लेकिन सृष्टि कितना प्रतिशत दिया है को देखता है ।

मतलब अगर किसी के पास करोड रूपए हैं और वह एक लाख दान में देता है। यहां लोग समझते हैं कि वह बहुत बड़ा दान है, बहुत दिया है । लेकिन जिसके पास हजार रूपए हैं और अगर वह 900 रूपये देता है , वह

सृष्टि के हिसाब में ज्यादा दिया है । कारण करोड रूपए वाला 1% दिया है और हजार रूपया वाला 90% दिया है । मतलब कम पैसे वाला ज्यादा पैसे वाला से अधिक दान दिया है ।

इसलिए अगर सृष्टि में कोई भी अगर अर्हत प्राप्त करना है, तब उन्हें जितना है उनमें से जितना हो सकता है दान देना चाहिए । क्योंकि सृष्टि में जितना प्रतिशत दिया है वही देखता है, ना कि कितना पैसे दिए हैं ।

इसलिए भविष्य में 900 रूपये देने वाला करोड़पति बनेगा और लाख रूपए देने वाला सामान्य होगा। इसलिए कितना दिया है या नहीं, बल्कि कितना प्रतिशत दिया है, वह मुख्य है ।

इसके प्रकार कोई भी अपने पास जो है उसमें से जितना ज्यादा दे सकते हैं, सृष्टि में करोड़ों देने समान है। न केवल करोड़ देने से ही करोड़ों का समान है । इसलिए अगर इस सृष्टि में अर्हत प्राप्त करना है तो अपने पास जो है, उसी में से जितना ज्यादा दे सकते हो , वही काफी है। करोड़ों की जरूरत नहीं है ।

इसलिए धनवान और गरीब को, दोनों को, समान अवसर है ,भविष्य में करोड़पति बनने का। इस प्रकार अपने पास जितना है उसमें से जितना अधिक दे सकते हो, वही महान होगा। भविष्य में लाभ मिलेगा और अर्हत प्राप्त करने वाला होगा ।

इस सृष्टि में यही विषयों को हमें समझाने के लिए , पूर्व काल में, पंडित लोग हमें कुछ पुराणों का कथायें द्वारा बता चुके हैं।

अभी उन्हें जानते हैं।

महाभारत युद्ध के बाद धर्मराज राज्य को पालन कर रहे थे। तब एक बड़ा यज्ञ किया था। यज्ञ के बाद राज्य में सब लोगों को शडरसोपित भोजन का व्यवस्था किया था। उसके बाद सबको जिसे जितना मांगा सबको दान दिया। उस भोजन और दान को देखकर सब आश्चर्य हो गए हैं । धर्मराज को सब प्रशंसा किया है। उतना दान कोई पहले नहीं किया है।

आगे भी कोई नहीं कर सकता है कहते हुए धर्मराज को प्रशंसा किए हैं।

ऐसे जब सब लोग धर्मराज को प्रशंसा कर रहे थे धर्मराज अपने अंदर-अंदर ही खुशी होने लगा। उतना बड़ा दान मैं ही कर सकता हूं। करके मैं

कितना भाग्यशाली हूं कितना महान हूं, मुझे कितना खुश नसीब है, मैं कितना खुश नसीब हूं, कहते हुए अपने भीतर अहंकार प्रवेश कर दिया ।

लेकिन मुख्य बात हमें समझना है कि जिसमें अहंकार प्रवेश होता, जितना भी महान हो, धीरे से उसका पतन शुरू हो जाता है। इस सभा में श्री कृष्ण भगवान भी थे। सहज बात है कि श्री कृष्ण भगवान को हर एक मन को पढ़ सकता है। तब धर्मराज का सोच को जाना है। अहंकार बढ़ने से धर्मराज को भी पतन होगा। इसलिए धर्मराज को समझाने के लिए वहां श्री कृष्ण जी ने एक संगठन सृष्टि कर दिया।

उसी समय सबको आश्चर्यचकित करने वाला विषय, एक नेवला सभा में प्रवेश किया है। उसको देखकर सब लोग आश्चर्य हो गए हैं। कारण यह है कि वह आधा सोने के रंग में था और आधा मामूली सा था । और उस नेवला च्का काम देखकर सबको और आश्चर्यचकित हो गये है । आश्चर्य हो गया है क्योंकि वहां जो कुछ बचे चावल को खाकर और उसमें लोटता था। सब उसी को आश्चर्य से देख रहे थे।

उसने लोटते लोटते बात करना शुरू किया । सब लोग धर्मराज का दान को प्रशंसा कर रहे हैं और बोल रहे हैं कि इससे बड़ा महान दान नहीं है । लेकिन मैं कहता हूं कि धर्मराज का दान महान नहीं है। नेवला को बात करना और वह जो कह रहा है कि धर्मराज का दान महान नहीं है , यह देखकर सब लोग आश्चर्यचकित हैं । सभा में एकदम निशब्द हो गया है। सब लोग इस नेवला को ही देख रहे हैं ।

इस सभा में धर्मराज के भाइयों जो थे उनको बहुत क्रोध हुआ। उस नेवला का शब्दों को सुनकर वह सब नेवला से पूछते हैं कि, क्या धर्मराज का दान महान नहीं है ? इससे बड़ा महान दान कौन कर सकता है ?

इस राज्य में सब लोग प्रशंसा कर रहे हैं और तुम ना कर रहे हो ? उन सब लोगों से तुम ही महान है क्या ? असली में दान के बारे में तुम्हें क्या मालूम है नेवला के ऊपर क्रोधित होकर उसके ओर जा रहे थे।

तब धर्मराज उनको मना कर कर उस नेवला से ऐसे कहा है कि, अगर आप बात कर रहे हैं मतलब आप महान है । मुझे समझ आया है। अगर मैंने

जो दान किया है वह महान नहीं है तो कौन सा दान महान है ? अगर ऐसे महान दान करने वाला है, मुझे बता दीजिएगा । अगर ऐसे लोग हैं तो ? धर्मराज ने नेवला से पूछा ।

तब नेवला ने ऐसे बताना शुरू किया। उसे सभा में सब लोग आशक्ति से सुन रहे थे। हे धर्मराज, आपके राज में ही एक ग्राम है जिसमें एक गरीब ब्रह्मण रहता है। उसका परिवार का थोड़ा सा जमीन है । उस जमीन में भोजे हुए फसल से ही अपना परिवार को पोषण करता है । जो भी आता है उनको अन्न दान करता है। ऐसे होते होते एक साल में वर्षो ना होने कारण फसल सही नहीं उगाया । इसलिए उनके घर में फसल जल्दी खत्म हो गया है। उसकी स्थिति ऐसा हो गया कि उसको खाने को भी कुछ नहीं था और सिर्फ पानी पीकर या खाली पेट रहकर कुछ दिनों तक गुजारा किया था । आखिर में उसे परिवार को भूख से प्राण निकलने वाला परिस्थिति आ गया था। तब उस ब्रह्मण ने दोबारा अपने ज़मीन को गया था । उसे जमीन में इधर-उधर बचा हुआ कुछ फसल को उठाया था। वह सब इकट्ठा करने से दोनों हाथों भरा था। उसको पीसकर चिल्का निकलकर, वह उन से भोजन बनाया । उस भोजन परिवार लोगों को एक-एक मुट्ठी मिला था। वह सोच रहे थे कि इसको खाकर अगर अपने प्राणों को खड़ा करेंगे तब भगवान कुछ ना कुछ रास्ता दिखा ही देगा। उसी उद्देश्य के साथ अपना अपना पत्ता पर एक-एक मुट्ठी का खाना रखकर तैयार हो गए थे।

इसी वक्त एक अतिथि घर पहुंचे थे । वह पूछने लगा कि उसको बहुत भूख लग रहा था और कुछ खाने को मांग रहे थे ब्रह्मण से। जिसने मांगा उसको कभी ना नहीं कहा है। तब ब्रह्मण ने सोचा कि अगर मैं अतिथि को दे दूंगा तो मेरा प्राण निकल जाएगा , नहीं दूंगा तो अभी तक, ना नहीं कह कर जी रहा था, अतिथि को निराश करने वाला हो जाऊंगा। उसने और सोचा था कि अगर अतिथि को निराश कर कर खुद खाया तब भी सिर्फ आज तक ही है। कल तो प्राण खोना ही पड़ेगा । इसलिए कल निकलने वाला प्राण आज निकल जाएगा तो क्या हुआ ? कम से कम प्राण निकलने से पहले एक अतिथि को संतुष्ट करने वाला हो जाता हूं। ऐसे सोचकर जो खाने वाला था

सब कुछ दे दिया अतिथि को ।

अतिथि वह मुट्ठी भर खाना खाकर कहता है कि उसकी भूख नहीं मिटा। तब उस परिवार के सभी लोग, उस ब्रह्मण की तरह सोच कर, एक अतिथि को संतुष्ट करने से ज्यादा कुछ नहीं है, कह कर अपना अपना खाना उस अतिथि को दे दिए। तब उस अतिथि ने कहा है कि वह संतुष्ट हुआ है और धन्यवाद कहकर चले गए थे।

इसी समय एक नेवला, भूख से, इस घर में प्रवेश किया। घर पूरा घूम लिया, लेकिन खाने को कुछ भी नहीं मिला था। आखिर में उसे अतिथि का खाने के पत्ते में कुछ दाने मिले थे। भूख से रहने वाला उस नेवला ने, इस दाने को खाया था। और उसको खाने के तुरंत आधा शरीर सोने के रंग में बदल गया था। इस परिणाम से नेवला आश्चर्य हो गया था । तब उसे समझ आया था कि, यह सब उस ब्रह्मण का महान दान का वजह ही है। वहां से वह चली गई थी।

बाद में नेवला को एक इच्छा हुई थी। ऐसे आधा सोने रंग होने का शरीर से अच्छा, पूरा शरीर ही सोने रंग हो जाते तो अच्छा रहेगा। ऐसा सोचकर उस ब्रह्मण की तरह कोई महान दान करने वाला मिलेगा तो मैं वहां भी खाना खाकर पूरा सोने का रंग मे बदल सकता हूं। ऐसे दान देने वाला घरों में घूम रहा था । लेकिन कहीं भी वह रंग नहीं बदल रहा था । जहां भी दान कार्यक्रम होते थे वहां गई थी , लेकिन कुछ भी फायदा नहीं मिला । ऐसे घूमते घूमते किसी ने उस नेवला को कहा था कि क्यों इधर-उधर घूम रहे हो, धर्मराज के वहां महान दान कार्यक्रम हो रहा है । तुम भी वहां जाकर प्रयत्न करने से आपका इच्छा पूरी हो सकता है । एक बार प्रयत्न करो। ऐसे कहने पर मैं इधर आया हूं। छोड़े हुए दाने को मैंने खाया था और उसमें लोटा-पलोटा किया हूं , लेकिन मेरा शरीर सोने के रंग में नहीं बदला। मुझे समझ आया था कि आपका दान महान नहीं है ।

बताइए धर्मराज, आपका दान महान है क्या ? या उस ब्रह्मण का दान महान है ? नेवला ने पूछा । उस ब्रह्मण के पास कुछ भी नहीं रहने पर भी, वह मरने के लिए तैयार हो गया था । वह खाने वाला मुट्ठी में खाना भी दान

में दे दिया। लेकिन आप चक्रवर्ती हैं । कितने भी दान करो आपके पास और भी है , ऐसे कहीं ज्यादा आपके पास हैं । उसी में से कुछ दान दिया। पूरा तो नहीं दान किया न ? नहीं न ? इसलिए उस ब्रह्मण का दान के सामने आपका महान कैसे होगा ? नेवला पूछा था ।

ऐसे पूछते ही धर्मराज को समझ आ गया था कि उस ब्रह्मण के सामने उसका दान बहुत कम ही है । अहंकार से भरी हुई उसकी मन को इस प्रकार पाठ सिखाया गया था। अपने को ज्ञानोदय करने के लिए उस नेवला को कृतज्ञ कह दिया । यह सब भगवान श्री कृष्णा करवाने वाला नाटक ही था । यह समझकर उसको नमन किया ।

इस प्रकार सृष्टि में कितना दिया, से नहीं ।अपने पास जो है उसमें से कितना ज्यादा दिया ही देखते हैं। इसलिए दान करने के लिए करोड़ों की जरूरत नहीं है। आपके पास जितना है उसी में से जितना अधिक दे सकते हो, वह भी महान दान है ।

क्योंकि बहुत लोग कहते हैं कि हमारे पास ज्यादा पैसे नहीं है अगर चाहे भी तो हम नहीं कर पा रहे हैं । उनके पास ज्यादा पैसे हैं, इसलिए वह दान कर रहे हैं और पुण्य कार्य कर रहे हैं । हमें दुख हो रहा है कि हमें अवसर नहीं है । ऐसे कहते हैं कुछ लोग। दान करने के लिए सिर्फ पैसे ही चाहिए। ऐसे समझ कर बहुत लोग पैसे कमाने में लग जाते हैं कि वह भी पुण्य कार्य कर सकते हैं।

इसलिए जितना है इससे संतुष्ट रहना है । उसी में से जो हो सकता है दान करो । जानिए, दान करने के लिए अलग सा कमाने का कोई जरूरी नहीं है । आपको इस सृष्टि में जो दिया है, वही काफी है , दान देने के लिए। उसी में से सब देना है । ज्यादा कमा कर देना नहीं । जितना है उसी में से ज्यादा देना है। वह ही महान दान होगा। जब हजारों हैं, उन्हीं में से 100 देंगे तब आप करोड़ों देने समान है। वह भविष्य में जरूर करोड़पति बनेगा ।

अगर आपके पास धन नहीं है, आप अपना समय दे सकते हो। उसी को समय दान कहते हैं । वाक को दान करो। आप श्रमदान करो। आपके पास जो भी है, वही दान करने से अर्हत प्राप्त करेंगे। भविष्य में आपका जीवन वैभवशाली होगा ।

लेकिन समय कैसे दान कर सकते हैं ? मतलब हमारे पास जो समय है, उसी में से थोड़ा समय लोक कल्याण काम कर सकते हैं। सबको ध्यान करवा सकते हो । अगर वाक दान करना है तो, आप सबको ध्यान सिखाओ और ज्ञान बोध करो । इस प्रकार श्रमदान करना है तो ध्यान संबंधित कार्यक्रम में भाग लेना और ऐसे कार्यक्रमों में सहाय करना ।

तब आप अनंत दान करने वाला होगा । भविष्य में और भविष्य जन्मों में धनवान बन जाएंगे। आपका आर्थिक स्थिति बढ़ेगा। इसलिए कहते हैं कि, ' जितना करोगे उतना मिलेगा महादेव ' ।

यहां हमें कुछ संदेह आते रहते हैं । क्योंकि अगर हम संसार में देखेंगे तो, पहले पहले कुछ लोगों का आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होता, कम होता है। लेकिन बाद में एकदम बहुत अच्छा हो जाता है। कुछ लोगों को पहले में आर्थिक स्थिति बहुत अच्छा होता है और बाद में बुरी तरह बदल जाता है । वह सब कुछ खो जाते हैं। और कुछ लोग हर समय एक ही तरह स्थिति में रहते हैं। ऐसे क्यों हो रहा है ? हमें कभी-कभी समझ में नहीं आता है ।

सामान्य लोग मानते हैं कि, जिसके पास अच्छा कमाई है वह नसीब वाला है और जिसके पास अच्छा कमाई नहीं है उसे बदनसीब वाला कहते हैं। लेकिन ऐसे होने का कारण है। एक छोटा सा उदाहरण देखते हैं :

पूर्व काल में फसल को रखने के लिए एक गोदाम होता था। उनमें हर तरीके का फसल रखते थे । पहले पहले सबसे नीचे खराब वाले टाइप का अगर रखते थे, इसके बाद अच्छे वाला टाइप रखते थे। लेकिन कुछ महीने बाद जब आपको फसल निकालना है, जब नीचे वाला दरवाजे खोलेंगे पहले आपको खराब वाले फसल ही निकलेगा। वह खत्म होने के बाद ही आपको अच्छे वाला फसल मिलेगा।

इसी प्रकार पिछले जन्मों में पहले अच्छे कार्य नहीं किए हैं । और बाद में पुण्य किया मतलब सबको धन-दान किया होंगे । इसलिए अब प्रारंभ जीवन अच्छा नहीं होगा और बाद में, एकदम बढ़ जाती है, मतलब धनवान हो जाते हैं। इसलिए आपका धन प्राप्त होने का कारण , आपका अभी किया हुआ कृषि से नहीं, या अपना बुद्धि नहीं है। वह सब बाहर दिखने वाला कारण

ही है। असलियत मे, सब भूतकाल में कमाया हुआ अर्हत ही है ।

क्योंकि दिन-रात धन कमाने केलिए कष्ट करने वाले बहुत लोग हैं । बुद्धि को उपयोग करने वाले बहुत हैं। मगर सब लोग कमा रहे हैं क्या ? सबको अच्छा हो रहा है क्या ? नहीं न ?

इसी प्रकार गोदाम में पहला अच्छा वाला फसल रखा और बाद में बुरा वाला रखा है। फिर निकालना समय, पहले अच्छा वाला फसल निकलेगा और बाद में बुरा वाला फसल निकलेगा। इसी प्रकार, पिछले जन्म में पहले अच्छा धर्म कार्य किए हैं, दान किए हैं । और बाद में नहीं किया और अधर्म व्यवहार किया है। तब प्रारंभ जीवन अच्छा रहेगा और बाद में बुरा रहेगा । आर्थिक स्थिति खराब हो जाएगा।

जानिए है कि, इस सृष्टि के नियमों न जानकर, आपका किया हुआ अधर्म कार्य ही आपका आर्थिक परिस्थितियों का कारण है । इसलिए जितना है उसी से संतुष्ट रहो, अय्याशी मत रहो। आर्थिक स्थिति जिनको बढ़ाना चाहते हैं, अगर भूतकाल में नहीं भी किया हो, कम से कम अभी कीजिएगा। दान करो, धर्म कार्य करो, जितना है उसी में से करना थोड़ा बहुत । इसी में से थोड़ा दूसरों को बांटो । अन्याय और अक्रम मार्ग में, अधर्म से , धोखेबाजी कर कर, नहीं कमाना है ।

इसलिए आर्थिक स्थिति बढ़ाने के लिए अलग से कृषि का अवसर नहीं है। अरहत होना काफी है। इसलिए अभी न होने पर भी, कम से कम भविष्य के लिए अरहत प्राप्त करो। जो भी चाहते हो वही दान करो । अगर ज्यादा चाहते हो आपके पास जो है उसी में से ज्यादा दान दे दो। मुख्य बात है कि सृष्टि धर्म जानकर जो भी करना है वह करो । आने वाले चीजों पर ध्यान नहीं रखना है । इसलिए श्री कृष्ण भगवान निष्काम कर्म करने को कहते हैं, क्योंकि, इस सृष्टि में जो कुछ भी किया हो, बिना पूछ कर अपनी अर्हत के हिसाब से, वापस मिल जाता है । सृष्टि के निर्णय के अनुसार जब आना है तब आएगा और जैसे आना है वैसे आ ही जाता है

4. अगर इसी जन्म में आर्थिक स्थिति को बढ़ाना है तो ?

प्रकृति में इसी जन्म में आर्थिक स्थिति को बढ़ाने केलिए अवसर है। इन्हीं विषयों के बारे में जानते हैं ।

देखिए अगर बैंक से पैसे लेना है तो, तीन प्रकार में , ले सकते हैं।

1. पहले ही, बैंक में पैसे जमा किया होना ।
2. कोई भी दौलत को गिरवी रखना ।
3. कोई दूसरा पैसे वाला का जिम्मा (गेरंटी) चाहिए ।

इन्हीं तीन प्रकारों से बैंक से पैसे ले सकते हैं ।

इसी प्रकार अगर प्रकृति से आपको पैसे मिलना है तो !

1. करना होगा।
2. आपका भविष्य गिरवी रखना है ।
3. कोई दूसरा सहाय करना है ।

1. करना होगा : -

अगर बैंक में तुम्हें रखना है , प्रकृति में आपको करना होगा । मतलब बांटना है। मतलब धन-दान देना है। साथ-साथ लोक कल्याण काम के लिए धन खर्च करना है। आपके पास जितना है, उसी में से जितने हो सकता है दान देना है। इसलिए शास्त्रों में कहा गया है कि 'बांटने से बढ़ता है' ।

एक उदाहरण देखते हैं । बैंक एटीएम सब जानते हैं। देखिए जहां एटीएम है , वहां मैनेजर नहीं रहता है, और क्लर्क भी नहीं होगा। कोई भी न रहने पर भी, 24 घंटे कभी भी आप पैसे ले सकते हो। लेकिन पैसे के लिए एटीएम में कार्ड डालना पड़ता है। सिर्फ कार्ड रखने से पैसे मिलेगा क्या ? नहीं। क्यों ? कार्ड का अर्हत होना चाहिए। अर्हत , मतलब अगर पहले ही डाला है तब निकलेगा। जितना रखा है उतना ही आएगा। लेकिन ? 1000 रूपये डालकर 3000 रूपए नहीं निकाल सकते हो । नहीं न ? जितना रखे हो उतना

ही मिलेगा ।

इसी प्रकार इस सृष्टि में, यह भूमंडल, भी भगवान का निर्माण किया हुआ सबसे बड़ा एटीएम है । अभी पैसे निकालने वाला एटीएम मानव निर्मित है, छोटी एटीएम है । भूमि, भगवान का निर्मित सबसे बड़ा एटीएम है । बैंक एटीएम के पास कोई भी नहीं रहता है, फिर भी पैसे निकाल सकते हो। इसी प्रकार भूमि नाम का एटीएम में भी , कोई नहीं रहता । लेकिन अगर पहले किया हुआ है तो, मिलेगा । कोई आपको लाकर नहीं देगा । आप अपना ही कृषि से आपको ऑटोमेटिक ही मिल जाएगा। इसलिए इससे पहले , अरहत को प्राप्त किया होना था।

देखिए बैंक में, इससे पहले ज्यादा रखा है तो एटीएम से ज्यादा निकाल सकते हो । कम रखे हैं तो कम ही आएगा। वही प्रकृति में अगर ज्यादा किया है तो, ज्यादा आएगा । कम किया है तो , कम मिलेगा । कुछ नहीं किया है तो, कुछ नहीं मिलेगा। लेकिन अभी लोग, बिना कुछ कर कर निकालना चाहते हैं , लेकिन प्रकृति में ऐसा नहीं चलेगा ।

देखिए बहुत लोग समझते हैं कि, हल्का सा पूजा कर कर , फूल रखकर, आरती देकर, अगरबत्ती जलाकर, थोड़ा सा नैवेद्य दिखाकर खाने से, मिल जाता है । ऐसा कर कर भगवान मुझे दे देंगे कहते हैं । कौन है देने वाला ? चाहे तो एक एटीएम के पास जाकर, पूजा पाठ कर कर, अक्षत डालकर, हल्दी और कुमकुम लगाकर , अगरबत्ती जलाकर, मांगे एटीएम से । 'मै बहुत कष्ट में हूं ,एटीएम,' कहकर मांगो, मुझे 5000 रूपये दे दीजिए । वह देगी क्या ? नहीं न ?

इसी प्रकार पूजा पाठ कर कर, नारियल फोड़ने से, आरती देने से, प्रकृति से कुछ नहीं मिलेगा। इसलिए जिसको ज्ञान है, वह करता है। और जिसको ज्ञान नहीं है , वह पूजा पाठ कर कर, आशा से इंतजार करता है ।

बैंक का एटीएम सिर्फ पैसे ही देगा । लेकिन भगवान का एटीएम, जो देगा वह मिलेगा, जितना देगा ,उतना मिलेगा । अगर हिंसा करते हो, हिंसा ही मिलेगा। आनंद देते हो, तो आनंद ही मिलेगा। हर एक ऊपर असूय रखेगा , तब सब लोग तुझ पर असूय होंगे, नष्ट करेगा तब नष्ट होगा ।

इसी प्रकार धन देंगे, तब धन मिलेगा ।

प्रकृति का एटीएम में से जो चाहते हो , वह ले सकते हैं । लेकिन जो चाहते हैं, वही करना पड़ेगा । बैंक एटीएम में डालना पड़ेगा और प्रकृति का एटीएम में करना पड़ेगा। कुछ भी नहीं करने से, कुछ भी नहीं मिलेगा । लेकिन दुनिया में दान देने के लिए इच्छुक नहीं दिखाते हैं । लेकिन लेने के लिए बहुत उत्सुक होते हैं। मगर कष्ट नहीं करेंगे तब इष्ट को कैसे मिलेगा ?

बहुत लोगों का यह संशय होता है। अगर मैं सब दे देता हूं अगर मिलेगा नहीं तो, मेरा क्या होगा ? इस प्रकार देने समय बहुत सोचते हैं। देखिए कोई भी दुकान में सामान देने के बाद हम पैसे देते हैं न ? या पहले ही दे देते हैं क्या? मतलब जब तक दुकानदार आपको सामान नहीं देता है , आप पैसे नहीं देते हैं । इसी प्रकार प्रकृति में भी आपको पहले देना पड़ेगा । जब देंगे तभी मिलेगा। उल्टा मिलने के बाद देंगे, यह नहीं चलेगा प्रकृति में। इसलिए प्रकृति का नियम जानिए है कि, जितना आपके पास है उसी में से देने का प्रयत्न करो।

इसलिए सृष्टि का नियमों को जानिए। जो देते हो, वही मिलेगा। जितना देते हो उतना ही मिलेगा। जैसे देते हो वैसे ही मिलेगा। इस सृष्टि में आपको देने तक का है, आपका दिया हुआ चीज को कब वापस करना , सृष्टि के नियम के अनुसार ही होगा। यही विषय भागवत गीता में भी कहा गया है ।

श्लोकः कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि (भ.गी.2-47)

तात्पर्य : हे अर्जुन तुम्हें कर्म करने को हीं अधिकार है, परंतु कर्म का फल का आशा करने का अधिकार नहीं है। कर्म फल का, आप कारण ग्रस्त नहीं है । और कर्म नहीं करने पर भी, आपको आशक्ति नहीं दिखाना चाहिए।

इसलिए प्रकृति में जो आप करना चाहते हैं वह करते रहना है । आपका किया हुआ कर्मों का वापसी , कब देना , कैसे देना और कितना देना, प्रकृति निर्णय करेगा । यह बात श्री कृष्ण भगवान कहते हैं।

इसके अलावा सबसे ऊपर, कर्म फल त्यागी, बहुत ही महान होता है।

यही विषय कहा गया है,

श्लोक **श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्ध्यानं विशिष्यते ।**

ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छान्तिरनन्तरम (भ.गी.12-12)

तात्पर्य : अभ्यास से ज्ञान श्रेष्ठ है, ज्ञान से ध्यान श्रेष्ठ है , ध्यान से कर्म फल को त्यागना श्रेष्ठ है। ऐसे कर्म फल त्यागना से , शीघ्र ही शांति मिलती है।

इसलिए प्रकृति में बिना आशा कर कर, जो भी करना है करो, तब जो मिलना है वह मिलेगा ।

जानिए कि, भूतकाल में आपने कुछ नहीं किया है , तभी आपका आर्थिक स्थिति खराब है। लेकिन निराश नहीं होना है । अभी भी देने से मिलने का अवसर है । सच्ची में अगर आपको करना है तो अभी कीजिए। कम से कम अभी से आपका आर्थिक स्थिति बड़ा सकते हैं। अवसर खोया हुआ नहीं है ।

यह विषय मैं नहीं कह रहा हूं, योग वशिष्ठम में वशिष्ठ महर्षि ने बोध किया है। उसने कहा है कि ,

श्लोक- **सर्वमें वेह मिसदा संसारे रघुनंदन**

सम्यकस्र युक्तात्सर्वे पौरुषात्सतुप्यते । (वशिष्ठामृत-1)

तात्पर्य : उसने कहा था, समस्त पदार्थ इस प्रपंच में उत्तम पुरुष प्रयत्न करने से ही, मतलब, कृषि से ही मिलेगा ।

उसने और भी कहा है,

स्लोक - **यधा संयतते? येनतधातेनानुभूयते ।**

स्वकर्मवेतिचानेन्या व्यतिरिक्तानरनव्रृक ।। (वशिष्ठामृत-13)

तात्पर्य : जो जैसे करता है वैसे ही उसका फल का अनुभव करेगा।

मतलब अगर धन देगा , तब धन ही मिलेगा न ? इसलिए जितना है, उसी में से देंगे, तभी मिलेगा न ? भगवान मेरे ऊपर दया नहीं किया करके रोने से कुछ फायदा नहीं है ।

अभी आपका जीवन जैसा भी है आपको डरने का आवश्यकता नहीं है। अभी भी आपको जो करना है वह कीजिए। आपका भविष्य अच्छा रहेगा। कुछ भी नहीं करने से भविष्य बदलेगा नहीं। ऐसे कैसे आ जाएगा ? बड़े लोग

कहते हैं न, ‘ जितना किया , उतना मिलेगा, महादेवा ’। इसलिए देने से ही मिलता है, जानिए ।

इसके अलावा सृष्टि की सिद्धांतों में ‘कर्म सिद्धांत ‘ को अनुसार करके, इसी जन्म में आपका किया हुआ कर्मों में 60 -70% कर्मों यहीं इसी जन्म में अनुभव करेंगे। निराश मत होना और जितना हो सकता है देते रहो। आपका भविष्य में आर्थिक स्थिति को बढ़ा सकते है।

2. आपका भविष्य को गिरवी रखना चाहिए :-

इस प्रकार अगर धन प्राप्त करना है तो ? बैंक में है तो, अपना घर या जमीन या सोना गिरवी रखना पड़ता है । लेकिन प्रकृति में आपका जीवन का भविष्य गिरवी रखना है। मतलब आपका गलतियां या पापों, धोखे, चोरी, लूटी कर कर आपका भविष्य गिरवी रखना है । ऐसे अगर भविष्य को गिरवी रखेंगे, धन प्राप्त होगा, लेकिन भविष्य में आर्थिक कष्ट होंगे, समस्याओं होंगे, व्यापार में नष्ट होगा । देखिए, बहुत लोग बिटकॉइन्स में नष्ट हो चुके हैं । कुछ लोग बेट्टिंग , कुछ लोग लॉटरी में नष्ट हो चुके हैं। इस तरह बहुत लोग अपने संपत्ति को खो चुके हैं। उदार में हो गए हैं बहुत लोग ।

मतलब कभी ना कभी गलत काम किया है, तभी आज खो दिए हैं । अभी हाथ से पैसे निकलने के बाद, कष्ट अनुभव करते वक्त, उदार नहीं चुकाकर कष्टों को सामने करते समय, जानेंगे कि, पाप कर्मों से , गलतियां कर कर, भविष्य को गिरवी नहीं रखना चाहिए ।

3. कोई दूसरा का सहाय करना है : -

बैंक में किसी दूसरे का जिम्मा या गारंटी चाहिए, लेकिन प्रकृति में किसी दूसरा का सहाय करना है ।

देखिए श्रीकांत को एक औरत ने गाड़ी दिया है । गाड़ी खुद तो नहीं खरीद सकता है, तभी दूसरों के द्वारा सहाय मिला है।

इसके अलावा वशिष्ठ महर्षि कहते हैं कि

श्लोक **प्राक्तनं चैहिकं चेतिद्विविधं विध्दि पौरुषं ।**

प्राक्तनोद्यतनेनानु पुरुषार्धन जयते ।। (वशिष्ठ अमृतम 2)

तात्पर्य : पूर्व जन्म में किया हुआ और इस जन्म में किया हुआ, करके,

दो तरह के पुरूष प्रयत्न होते हैं । उसमें से पूर्व जन्म का पुरूष प्रयत्न को इस जन्म का पुरूष प्रयत्न से शीघ्र विजय कर सकता है।

देखिए पूर्व जन्म में अधर्म तरीके से कमाया, धोखेबाजी से, लूटी कर कर, जैसे काम करने पर, इस जन्म का आर्थिक स्थिति खराब होकर जन्म लेना पड़ा। अगर धन रहने पर भी उसको खोना पड़ता है। और आर्थिक समस्याओं में फंस जाते हैं। कारण भूतकाल में ऐसे कर्म किए होने से ।

देखिए व्यापारी लोग बहुत अधर्म मार्ग में कमाते हैं , उद्योगी लोग रिश्वत लेकर कमाते हैं, राजकीय लोगों के बारे में बताने का जरूरत ही नहीं । इस प्रकार सब लोग अधर्म मार्ग में ही कमा रहे हैं । लेकिन इन सब के ऊपर एक है, जो देख रहा है। सबको और सारे विषयों को । यह भूलना नहीं चाहिए । हर समय अपने आप को होशियार समझ कर दूसरों को धोखा देना, अन्याय और अक्रम मार्ग में कमाना , अपना अधिकार से लूटी करना। ऐसे कमाकर खुशहाली हो सकता है, लेकिन उस वैभवता सिर्फ कुछ समय तक ही होगा ।

देखिए, दुर्योधन ने माया जूधा खेल कर पांडवों का राज्य हड़प लिया। मतलब अधर्म मार्ग में ही कमाया। जो अपना नहीं था पांडवों का आधा राज्य ले लिया था । लेकिन कितना समय रहा था ? सिर्फ 10 - 12 साल तक ही। बाद में युद्ध आया था। क्या हुआ ? सारे कौरवों को नाश हुआ न ? केवल पांडवों का राज्य नहीं खुद दुर्योधन का राज्य भी खो दिया था। पूरा परिवार ही नाश हो गया था । अगर दुर्योधन अधर्म मार्ग मतलब सृष्टि के विरूद्ध काम नहीं किया होता , अपना आधा राज्य में अपनी पत्नी और बच्चों के साथ और पूरा परिवार के साथ, खुशी में जीवन बिताते थे । मगर यह सब अत्याशा की वजह से, अधर्म मार्ग में कमाने का प्रयत्न से ही हुआ है न ? इसलिए अधर्म की कमाई बहुत समय तक नहीं रहेगा। यह विषय समझना है।

कुछ लोग समझते हैं कि वह बहुत बड़ा अधिकार है और बड़े स्थाई का पद में बैठा है, और वह कुछ भी कर सकता है । जितना चाहता हूं उतना रिश्वत ले सकता हूं । कई करोड़ अक्रम मार्ग में कमा सकता हूं । याद रखिए

कमाकर कुछ दिन के लिए खुश हो सकते हो लेकिन ज्यादा दिन नहीं । इसके अलावा अगला जन्म में गरीबी में जन्म लेना पड़ेगा , भिखारी होकर जन्म लेना और नरक का अनुभव करना पड़ेगा ।

जिनका आर्थिक स्थिति खराब है उन लोगों का स्थिति यही है। हर एक अलग-अलग कर्म कर कर आए हैं । बहुत लोगों को अपना भूतकाल मालूम नहीं है। इसलिए रोते हैं अपनी परिस्थिति से ।

पत्री जी कहते हैं कि ' अपना वास्तविकता के लिए खुद ही सृष्टि करता है ' ।

इसलिए आपका वास्तव स्थिति का ऐसे होने का कारण खुद ही है। मतलब भूतकाल में किया हुआ कर्मों को अभी भुगत रहे हो। इसलिए आपको रोने से , या दुखी होने से, या किसी और को निंदा करने से, या दूसरे धनवान को देखकर असूय होने पर, आपका स्थिति में बदलाव नहीं आएगा ।

तब ऐसी हालत में रहने वालों को अपनी स्थिति में बदलाव लाने के लिए क्या करना ? क्या करने से स्थिति में बदलाव आएगा ? मतलब सृष्टि के अनुसार प्रयत्न करना चाहिए। तब सृष्टि नियम क्या है ? अगर देते हो, तब मिलेगा। और जो देता है वही मिलेगा । इसलिए अगर धन चाहिए धन देना होगा। इसलिए लोक कल्याण कर्मों के लिए जितना है उसी में से थोड़ा खर्च कीजिए । धन-दान करो, दूसरों की सेवा करो, अच्छा कार्यक्रमों के लिए पैसे खर्च करो ।

हमारी सोसाइटी में बहुत लोगों में बदलाव आया है। श्रीकांत में आया है न ? मधु मे भी आया है न ? कुकटपल्ली रमन में आया हैं न ? उसने बहुत सेवा किया है तभी बदलाव आया है । इस प्रकार बहुत लोगों में बदलाव इसी जन्म में मैंने देखा हूं ।

इसलिए जितना है उसी में से थोड़ा लोक कल्याण के लिए खर्च कीजिए। दूसरों का आशा मत करो । इसी प्रकार जो नहीं करना, मत करो। जो करना है वह करो । जो आना है वही आएगा, किस समय पर आना है तभी आएगा। कुछ लोग पूछते हैं कि हमारे पास कुछ नहीं है , कैसे दे सकते हैं? कैसे धन कमा

सकते हैं, करके पूछते हैं ?

इसलिए अगर धन बढ़ाना है, धर्म मार्ग में कमाना है, दान करना है। जितना है उसी में से थोड़ा लोक कल्याण के लिए खर्च करना है। अच्छे कार्यक्रम कर कर, आत्म सेवा करने पर भविष्य में आपका आर्थिक स्थिति बढ़ेगा। कोई संदेह नहीं है उसमें ।

देखिए, कोई अच्छी आर्थिक स्थिति में हो जाते, तब लोग उसको भाग्यशाली कहते हैं । अगर स्थिति खराब हो गया, तब उसे बदनसीब वाला कहते हैं। लेकिन यह नहीं सोचते हैं कि वह ऐसे क्यों हुआ ? उसके पीछे कितना कृषि है ? वह नहीं जान सकते हैं । उसका वही कृषि और सत्कर्म ही उसका बढ़ावा का कारण है । ऐसी कोई भी करने से उसकी स्थिति में बदलाव आएगा ही।

सृष्टि को मतलब भगवान को अपना पराया कुछ नहीं होता है सब समान है क्योंकि सब एक ही है।

वशिष्ठ महर्षि कहते हैं :

श्लोकः द्वोहुडावि युध्येते पुरुषार्धा समासमौ ।
प्राक्तनश्चैव शाम्यत्यत्राल्पवीर्यवान ।। (वशिष्ठ अमृतम - 5)

तात्पर्य : पूर्व जन्म में अगर आपका पुरुष प्रयत्न - अगर पाप कर्मों, अधर्म कार्यों है, मान लीजिए एक बकरा है । इसी प्रकार इस जन्म के पुरुष प्रयत्न में आपका धर्म कार्य , दान कर्म, अच्छा सेवा कार्यक्रम करना, उसके लिए पैसे खर्च करना -यह दूसरा बकरा है।

इन दोनों बकरों के युद्ध में कमजोर जो होगा वह हार जाएगा ।

मतलब पूर्व जन्म आपका अधर्म कार्यक्रम, जैसे बहुत ही ज्यादा है, तब अधर्म वाला बकरा ज्यादा बलवान है। लेकिन अगर अभी करने वाला दान, सेवा कार्यक्रम, कम है, मतलब धर्म कार्यक्रम वाला, धर्म कार्य वाला बकरा कमजोर है। तब क्या होगा ? कमजोर वाला हार जाएगा। मतलब आपका आर्थिक स्थिति थोड़ा सा भी बढ़ेगा नहीं । आप कहते हैं कि मैं उसके लिए दिया, इसके लिए खर्च किया हूं । लेकिन जिसको भी दिया होगा वह कमजोर ही है। इसलिए धन नहीं बढ़ेगा ।

इसलिए धर्म कार्यक्रमों को करते रहना है। जितना हो सकता है उतना करते रहो। हर प्रकार की करते रहना है । तब देने वाला बकरा बलवान हो जाएगा और अधर्म वाला बकरा कमजोर हो जाएगा। और हार जाएगा। तब से आपका आश्चर्यचकित होने वाला बदलाव आपकी आर्थिक स्थिति में आएगा। जो भी करेगा आपको अच्छा होगा कोई भी व्यापार करने से अच्छा होगा ।

उसने और भी कहा है : -

श्लोक : दोषः शाम्यत्यसंदेहं प्राक्तनोद्यतनैर्गुणैः ।

दृष्टान्नोत्र ह्यस्तनस्य दोष स्याध्यगुणैः क्षयः।। (वशिष्ठ अमृतम 8)

तात्पर्य : जैसे पिछला दिन का अजीर्ण रोग को आज का औषधि से कम हो जाता है, वैसे पिछले जन्मों का पुरुष प्रयत्न, मतलब पाप कर्मों, अधर्म कर्मों आदि, यह सब इस जन्म का पुरुष प्रयत्न से, मतलब दान, सेवा कार्यक्रमों से जरूर मिट जाता है। पिछले जन्म में जाने , अनजाने में , अत्याशा से, और अक्रम मार्ग में कमाया था । लेकिन इस जन्म का सेवा कार्यक्रमों से वह सब मिट जाएगा ।

जानिए की कमाना महान नहीं है, सेवा करना महान है। सेवा ही कमाई है । धन कमाया हुआ दिखता है, सेवा नहीं दिखता है। अगर धन कमाया, मतलब पूर्व जन्म के पुण्य कर्मों के वजह से मिला है। लेकिन अनुभव करने से वह पुण्य खत्म हो जाता है। बाद में धन कमाई रुक जाता है । तब फिर रोना शुरू हो जाता है। मेरे जीवन ऐसे कैसे हो गया ? इसलिए जितना भी अभी कमा रहे हो, इस तरह का कमाई जीवन भर नहीं रहेगा। यह विषय जानिए । इसलिए आपका सेवा कार्यक्रम, पहले की तरह , अभी भी करते रहना चाहिए, दान कार्यक्रम भी ।

देखिए, बैंक में पैसे रखकर हर रोज थोड़ा निकाल रहे हो । लेकिन जीवन भर थोड़ी ले सकेंगे ? कितने दिन तक ले सकते हो ? जब तक उसमें बैलेंस है न ? उसके बाद नहीं ले सकते हो न ? इसलिए हर समय आपको लेना है तो, उसमें डालना ही पड़ेगा ।

बहुत लोग समझते हैं कि वह बहुत भाग्यशाली हैं। लेकिन जितना है, वही मिलेगा। जिस दिन भाग्य का स्टॉक खत्म होता है, तब नहीं मिलेगा। जो मिला वह भी खत्म हो जाएगा ।

इसलिए शिरडी बाबा कहते हैं कि, जो भी आपको दिया हुआ है, उसे त्याग भाव से खर्च करो । मतलब अपने जरूरतो के लिए इस्तेमाल कर कर, थोड़ा बहुत त्याग दो । मतलब सेवा कार्यक्रमों और लोक कल्याण के उपयोग करो।

आपका पूरा नहीं देने का जरूरत है , उदार नहीं कर कर देना , मगर जितना है उसी में से जितना हो सकता है उतना देना। नहीं तो आपका समय देना, वाक देना, शक्ति देना, ज्ञान देना कुछ भी देते रहो।

इसके अलावा अगर मनी मेडिटेशन करने से, कर्म विपाक ध्यान करने से , आपको कोई फायदा नहीं है। वह आपको संतुष्टि देगा लेकिन फल नहीं मिलेगा ।

इस प्रकार, जैसे हमें वशिष्ठ महर्षि ने कहा था , अगर अभी हम अपनी प्रयत्न जारी रखेंगे, तब जरूर हमें जो भी भूतकाल में हैं ,वह सब निकल जाएगा । हमारा जीवन बदल जाएगा । कोई संदेह नहीं है ।

इसलिए आपका जीवन के बारे में चिंतित नहीं होना। सिर्फ करने पर दृष्टि लगाओ। सब अपने आप ठीक हो जाएगा। परिणाम प्रकृति के ऊपर छोड़ दीजिए। आप जो भी कर रहे हैं , सब रिकॉर्ड हो रहा है । समय आने पर आपका किया हुआ कर्मो का फल जरुर मिलेगा । आपका आर्थिक समस्याओं खत्म हो जाएंगे। आर्थिक स्थिति बढ़ेगा ।

एक विषय याद रखना, 'जो कुछ भी हो रहा है आपके जीवन में , वह शाश्वत नहीं है।' यह जानिए ।

मुख्य बात है की 'श्वास पर ध्यान' रखकर ध्यान कीजिए । आपका बुद्धि विकसित होकर, बिना पूछने से ही, देता रहेंगे । आपका जीवन खुद ही बदलेंगे ।

अगर अत्यंत धनवान बनना है तो ?

इस संसार में हर एक करोड़ों कमाने के लिए ही देख रहे हैं। उस प्रकार जितना भी करोड़ों कमाने के बाद भी और ज्यादा करते रहते हैं। कारण, जितना ज्यादा कमाते हैं, उतना बड़ा महान, का भाव रखते हैं। थोड़ा कमा कर नहीं रुकते, और ज्यादा कमाकर उसको देखकर खुशी में डूबते हैं। इसी प्रकार जो नहीं कमा पा रहे हैं, वह अपने आप को बदनसीब समझते हैं। और कमाने के लिए, गलतियां, पाप कामों भी करते हैं। लेकिन अगर देखेंगे जितना भी कमा रहे हैं ,और कमाने को होता ही रहता है । क्योंकि एक से बढ़कर एक धनवान होता रहता है ।

यह अभी दुनिया का स्थिति है। कोई भी इसके ऊपर नहीं सोच रहे हैं। एक प्रकार देखेंगे तो, एक से बढ़कर एक धनवान बनने में लगे हुए हैं। इसलिए अपना पूरा जीवन कष्ट करते रहते हैं। लेकिन अगर देखेंगे, सब अपना सपना पूरा नहीं कर कर ही , जीवन समाप्त कर देते हैं। लेकिन अगर किसी को इस जीवन में सबसे बड़ा धनवान बनना चाहते हैं, तब एक मार्ग भी है। वह क्या है, जानते हैं ।

पहले आप एक विषय सोच लो । करोड़ों कमाना है या करोड़पति को लाइन मारना है ? मतलब एक होशियार लड़की एक करोड़पति को लाइन मारने को कहती है । क्योंकि कितने भी साल कष्ट करो, यह जीवन पर्यंत कष्ट करो, करोड़ों कमाना मुश्किल है । कभी-कभी नहीं भी कमा सकते हो। लेकिन अपनी होशियारी से अगर करोड़पति को लाइन मार कर शादी करेंगे, तो करोड़ों अपना ही हो जाते हैं न ?

इसलिए ऐसे पूरा जीवन कष्ट कर कर एक करोड़पति बनने से अच्छा , अगर इस सृष्टि का सबसे बड़ा करोड़पति को लाइन मार कर, मतलब प्रयत्न पूर्वक कर कर , उसे पाएंगे ? तब उससे बड़ा भाग्यशाली कौन होगा ? मगर इस सृष्टि में सबसे बड़ा करोड़पति कौन है ? वह एक ही है। वह है भगवान । उससे महान इस सृष्टि में कोई नहीं है । क्योंकि यह सृष्टि ही उसका है। इस सृष्टि में करोड़ों लोकों , सब उन्हीं का है और उसमे सारा संपत्ति उसी का है।

आखिर में, यह भूमंडल भी उन्हीं का है। इस भूमंडल में संपत्ति सब उन्हीं का है न ? यह विषय को न जानकार, इस पृथ्वी पर थोड़ा सा जमीन को कमा कर

अपने आप को महान समझ रहा है। अहंकार दिखा रहा है, गर्व महसूस कर रहा है। और खुश हो रहा है। अंत में सब कुछ छोड़कर चले जा रहा है। फिर बाद में दिखाई नहीं देता है।

लेकिन भूमि पर जो करोड़पतियां हैं, राजा लोग हैं , चक्रवर्ती हैं, कुबेर हैं , उनके ऊपर, भगवान ही महान है। और सबसे धनवान है। इसलिए होशियार लोग जीवन भर कष्ट नहीं करते हैं। जीवन को बेकार नहीं करते हैं। वह लोग अपना जीवन, उस अत्यंत महान करोड़पति भगवान को अपनाने का प्रयत्न करते हैं। भगवान को लाइन मारते हैं। आखिर में भगवान को पाते हैं। उस प्रकार भगवान को पाने वाला ही भाग्यशाली है। कारण जो भगवान को पाते हैं, मतलब सब पा लिया है न ? ऐसे लोग अत्यंत धनवान है न ?

तब भगवान को कैसे पा सकते हैं ? भगवान को कैसे लाइन मारना है ? मतलब पहले हमें जानना है कि , भगवान कौन है ? वह कहां रहता है जानना चाहिए । तब उसे कैसे पाना है जानना है ।

जानिए, भगवान कोई नहीं है, आत्मा है । यही विषय भागवत गीता में अध्याय 10, 20 श्लोक में श्री कृष्ण भगवान कहते हैं। तब अगर आत्मा ही भगवान है, वह कहां रहता है ? मतलब हम कहते हैं कि भगवान सबके अंदर है न ? इसलिए जानिए की सबके अंदर रहने वाला भगवान अपना शरीर के अंदर भी है ।

तब शरीर में रहने वाला भगवान को पाने के लिए और पहुंचने के लिए एक ही रास्ता है - ध्यान । जो कोई ध्यान करता है, वह भगवान को पाएंगे और सब चीज को पाने वाले होते हैं। उनसे बड़ा धनवान, भाग्यशाली कोई नहीं होता है । क्योंकि वह ब्र्मानंद पाते हैं और समस्त दुखों से शाश्वत के लिए ही निकल जाते हैं। इसलिए करोड़ों के पीछे मत पड़ना , ध्यान के पीछे पड़ना। भगवान को पाओ और अत्यंत धनवान बनो। भाग्यशाली बनो ।

इसलिए परम योगी कबीर ,कहते हैं कि , 'जो धन, आपके साथ जन्म-जन्मान्तरों तक के लिए आता है, उस धन को कमाओ। बहुत कष्ट कर कमाया हुआ भौतिक धन , किसी को सर पर रखकर मरते वक्त जाना, मैं नहीं देखा हूं । '

श्री तटवर्ती वीरा राघवराव का हिन्दी किताब

1) आत्म शास्त्र ।..................................Rs.200/-
2) ध्यान विद्या ।....................................Rs.160/-
3) भगवद् गीता का सार ।.......................Rs.160/-
4) एक और जन्म ।..............................Rs.160/-
5) सत्य मार्ग ।.....................................Rs.160/-
6) 'गाइडिंग' ध्यान क्यों नही ? Rs.120/-
7) भगवान कौन हैं। Rs.120/-
8) कर्म सिद्धांत ।..................................Rs.120/-
9) विज्ञान का अर्थ - निहितार्थ Rs.120/-
10) मरने से पहले मरना है। Rs.130/-
11) ब्रह्म ज्ञान।...Rs.100/-
12) यह जीवन क्यों हैं ? Rs.100/-
13) मरने के बाद, साथ में आने वाले विषयों ।.. Rs.80/-
14) भागवत के दृश्यों का अर्थ...................... Rs.80/-
15) दुख निवारण का मार्ग........................... Rs.75/-
16) आर्थिक स्थिति बढ़ाना है तो ? Rs.60/-
17) सत्य Rs.50/-
18) क्या हम इस लोक के वासी हैं
या परलोक के वासी हैं? Rs.50/-
19) गुरु को पहचानना कैसे ? Rs.50/-

For Books Please Contact :

TATAVARTHI VEERA RAGHAVARAO

BHIMAVARAM. Ph: 94403 09812

दुनिया में पैसे नहीं होने पर दुःखी है,
पैसे कमाने के लिए प्रयत्न करने वाले हैं,
कुछ लोग कमा नहीं पाने से दुःखी हैं,
कुछ पैसे वालों को देखकर कुछ लोग का
जलन होता है, ऐसे कई प्रकार के लोग हैं।
कुछ लोग कुछ नहीं कर पाने पर, निराश हैं,
कुछ लोग भगवान को निंदा करते रहते हैं ।
इसलिए आर्थिक विषयों पर
हमें अवगाहन करना चाहिए।

- तटवर्ती वीर राघवराव

Rs.60/-